हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

पाठ्यक्रम संरचना

एम.ए. हिन्दी समसत्र पद्धति

(C.B.C.S.)

अध्यादेश 14 के अनुसार

प्रथम एवं द्वितीय समसत्र 2020–21

तृतीय एवं चतुर्थ समसत्र 2021–22

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सी.बी.सी.एस. पर आधारित सेमेस्टर पाठ्यक्रम (एम.ए. हिन्दी)

विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण :-

विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण एक प्रमुख संस्थान के रूप में सर्वोत्तम गुणवत्ता के शिक्षण और सीखने के कार्यक्रमों की पेशकश करना है और ऐसे स्नातक/स्नातकोत्तर छात्रों को तैयार करना है; जो चुने हुए पेशे में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं और अग्रणी बनकर समुदाय, राष्ट्र और दुनिया को बेहतर बनाने में अपना योगदान देते हैं।

विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण एक ऐसे आदर्श समाज और बौद्धिक वातावरण की स्थापना करना है जो सह–अस्तित्व के मूल्यों का आरम्भ करता है, पोषण करता है और इसे स्थाई बनाता है तथा उत्कृष्टता को प्राप्त करता है।

हमारे माननीय कुलपति के गतिशील नेतृत्व में विश्वविद्यालय कुछ महत्वाकांक्षी योजनाओं पर काम कर रहा है। विश्वविद्यालय को 'नॉलेज सिटी' के रूप में विकसित करने का विचार है।

विभाग के बारे में :-

विभाग 1983 में अपने प्रारम्भिक नाम ''महाकवि केशव अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र'' के साथ अस्तित्व में आया। विभाग अस्तित्व में आया मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय कुंवर अर्जुन सिंह की ओरछा में केशव जयन्ती पर की गई उद्घोषणा से। प्रारम्भ में डॉ. नागेन्द्र सिंह, डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल तथा डॉ. बृजेश द्विवेदी, श्री उमेश श्रीवास्तव वर्ष 1986 में अनुसंधान केन्द्र के सदस्य के रूप में शामिल हुए। 1989 में प्रो. कमला प्रसाद पाण्डेय निर्देशक के रूप में नियुक्त हुए। 1990 से एम.फिल. हिन्दी की कक्षायें संचालित की जाने लगी। 1993 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उच्च स्तरीय समिति की सिफारिश तथा राज्य शासन के अनुमोदन के पश्चात् प्रो. कमला प्रसाद पाण्डेय के नेतृत्व में हिन्दी

विभाग की स्थापना हुई। तब से आज तक विभाग में एम.ए., एम.फिल. कक्षायें सफलतापूर्वक संचालित हैं तथा बड़ी संख्या में छात्र शोध कार्य कर रहे हैं। जून 1994 में सहायक आचार्य के रूप में डॉ. दिनेश कुशवाह की नियुक्त हुई। 1996 में प्रो. रमाकान्त श्रीवास्तव रीडर के रूप में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से आये तथा 1998 में प्रो. कमला प्रसाद पाण्डेय की सेवानिवृत्ति के बाद विभागाध्यक्ष बनाये गये। प्रो. रमाकान्त श्रीवास्तव के बाद प्रो. कौशल प्रसाद मिश्र और प्रो. आर्या प्रसाद मिश्र क्रमशः हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर आसीन हुए। 06 नवम्बर 2003 से प्रो. दिनेश कुशवाह हिन्दी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। विभाग से पढ़े अनेक मेघावी विद्यार्थी आज कई महत्वपूर्ण पदों पर हैं। विभाग के एम. ए., पी–एच.डी. छात्र विश्वविद्यालयों से लेकर देश के विभिन्न महाविद्यालयों, केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों में अध्यापक, संस्थानों में हिन्दी अधिकारी आदि हैं। विभाग के एक शोधार्थी का I.P.S. में चयन हुआ है। प्रत्येक वर्ष विभाग के विद्यार्थी नेट, जे.आर.एफ., स्लेट तथा राजीव गांधी फेलोशिप में चयनित होते रहे हैं। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा का यह सौभाग्य रहा है कि इसके संस्थापक, अध्यक्ष प्रो. कमला प्रसाद पाण्डेय, हिन्दी जगत के एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति थे। उनके साथ कार्यरत उपाचार्य डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव तथा प्राध्यापक डॉ. दिनेश कुशवाह, राष्ट्रीय स्तर के कवि, कथाकार तथा समालोचक थे, उस समय देश के सभी विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों में यह संयोग सराहा जाता था। हिन्दी विभाग की स्थापना के साथ ही एक ऐसा प्रभाव दिग–दिगन्त में व्याप्त हुआ कि यहाँ से पढ़े हुए छात्र पूरे देश में अपनी विद्वत्ता और प्रतिभा लेकर छा गये।

हिन्दी विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पहली बार जो दस लाख रूपये का विशेष अनुदान दिया उसमें से 5 लाख रूपये पुस्ताकलय के लिये थे। जिनमें से पुस्तक मेलों तथा देश के विभिन्न राज्य की हिन्दी ग्रंथ अकादमियों/संस्थानों/प्रकाशनों आदि के सूची पत्रों से श्रेष्ठ पुस्तकों का चयन कर उनका क्रय किया गया। तब से निरन्तर प्रकाशित होने वाली सारी महत्वपूर्ण पुस्तकें विभागीय पुस्तकालय में मंगायी जाती रही है। इस समय विभाग के पुस्तकालय में लगभग 10000 पुस्तकें हैं। हिन्दी की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के उपलब्ध अंकों को विभाग

में मंगाया जाता है। इस तरह छात्रों और शोधकर्ताओं को विभाग में पुस्तकालय से नवीनतम और अद्यतन जानकारी मिलती है। कुछ महत्वपूर्ण अप्रकाशित शोध प्रबंध दान के रूप में प्राप्त हुए हैं। हिन्दी विभाग का पुस्तकालय आज की तारीख में एक समृद्ध और आधुनिक पुस्तकालय है।

हिन्दी विभाग की ओर से क्षेत्रीय कलाओं एवं महत्वपूर्ण कार्यक्रमों, राष्ट्रीय संगोष्ठियों, व्याख्यान मालाओं, विशेषज्ञों के साक्षात्कार तथा लोक नाट्य की वीडियो रिकार्डिंग के कैसेटों का संग्रह किया गया है। स्थानीय मंडिलियों की नौटंकी एवं लोक गायन का भी संग्रह हैं। बघेलखण्ड की लोक कला चयन शिविर लगभग 40 मण्डलियों के कार्यक्रमों की भी रिकार्डिंग की गई है। इसी प्रकार उपरोक्त आयोजनों तथा लेखकों, कलाकारों के छायाचित्रों का विपुल संग्रह है। विभाग में लगभग 50 प्रख्यात साहित्यकारों के छायाचित्र जो भारतेन्दु से लेकर आधुनिक काल के श्रीकान्त वर्मा तक फैले हुए हैं, लगे हुए हैं।

हिन्दी विभाग के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सन् 1993 में ''मध्ययुगीन बुन्देली साहित्य और कलाओं में अन्तर्संबंधों का अन्वेषण'' शीर्षक से मेजर प्रोजेक्ट स्वीकृत किया था। जिसे निर्धारित समयावधि में पूरा कर लिया गया था।

हिन्दी विभाग के द्वारा राष्ट्रीय और प्रादेशिक विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गई है। जैसे महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन जन्म शताब्दी समारोह, लोक साहित्य और संस्कृति, अमीर खुसरो स्मृति समारोह, ''रीतिकाल और केशव'' राष्ट्रीय संगोष्ठी। ये आयोजन मानव संसाधन विकास मंत्रालय संस्कृति विभाग एवं विश्वविद्यालय के सहयोग से सम्पन्न हुये हैं। पं. हरिराम व्यास स्मृति समारोह एवं महाकवि केशव जयंती समारोह राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर ओरछा में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। जिसमें देश भर के प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित कर अनेक विषयों पर व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं।

समय–समय पर विभाग का दौरा करने वाले कुछ प्रमुख प्रख्यात विद्वानों, मनीषियों में डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन (उज्जैन), डॉ. नामवर सिंह (नई दिल्ली), श्री राजेन्द्र यादव (नई दिल्ली), डॉ. बृजेन्द्र नारायण सिंह (हैदराबाद), आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी (उज्जैन), पद्मश्री शरद जोशी (मुम्बई), पद्मश्री हबीब तनवीर (रायपुर), डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी (नई दिल्ली), प्रो. काशीनाथ सिंह (वाराणसी), प्रो. श्याम सुन्दर शुक्ल (वाराणसी), प्रो. कुमार पंकज, प्रो. अवधेश प्रसाद, प्रो. सदानंद शाही, प्रो. राजकुमार, प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी, प्रो. राजमणि शर्मा, डॉ. केदारनाथ सिंह (जे.एन.यू. नई दिल्ली), प्रो. कांतिकुमार जैन (सागर), डॉ. विजय बहादुर सिंह (भोपाल), प्रो. चौथीराम यादव (वाराणसी), श्री अरुण कमल (पटना), प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल (पूर्व अध्यक्ष–संघ लोकसेवा आयोग, जे.एन.यू. नई दिल्ली), मैत्रेयी पुष्पा, अर्चना वर्मा, संजीव (पं. बंगाल), शिवमूर्ति (लखनऊ), महेश कटारे (ग्वालियर), प्रो. परमानंद श्रीवास्तव (गोरखपुर), प्रो. सत्यप्रकाश मिश्र (इलाहाबाद), श्री राजेश जोशी (भोपाल), प्रो. चित्तरंजन मिश्र (प्रति कुलपति, वि.वि. वर्धा), प्रो. रामकिशोर शर्मा (इलाहाबाद), प्रो. रेवती रमण (मुजफ्फरपुर), प्रो. सोमा बंदोपाध्याय (कोलकाता), प्रो. मुस्ताक अली (इलाहाबाद), प्रो. प्रहलाद अग्रवाल (सतना), प्रो. सत्येन्द्र शर्मा (सतना), प्रो. देवेन्द्र (लखनऊ), डॉ. कालीचरण स्नेही (लखनऊ), प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल (जबलपुर), प्रो. सुरेश आचार्य (सागर), प्रो. विनय दुबे (भोपाल), प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव (छपरा), प्रो. चंदा बेन (सागर), प्रो. सुरेन्द्र स्निग्ध (पटना), डॉ. मुक्ता (बनारस), डॉ. उर्मिला खरपुसे (छिंदवाड़ा) आदि।

विभाग ने हिन्दी के क्षेत्र में नवीनतम विकास के बारे में छात्रों के ज्ञान में सुधार के लिए आमंत्रित वार्ता, कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया है।

कार्यरत शिक्षक :-

1. प्रो. दिनेश कुशवाह	आचार्य एवं अध्यक्ष
2 डॉ. बारेलाल जैन	अतिथि विद्वान
3. डॉ. अनुराग मिश्र	अतिथि विद्वान
4. डॉ. निशा पटेल	अतिथि विद्वान

लक्ष्य :-

1. छात्रों के बीच साहित्यिक कौशल का विकास करना और उन्हें अनुसंधान के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए तैयार करना।
2. विषय में अधिक रूचि पैदा करना और छात्रों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करना।
3. तार्किक तर्क को मजबूत करना जो साहित्यिक अवधारणाओं को समझने का मुख्य घटक है।
4. प्राचीन भारतीय लोक संस्कृति से छात्रों को परिचित कराना।
5. विश्वविद्यालय में हिन्दी के ऐसे शोधार्थी और छात्र तैयार करना जो विश्व स्तर पर हिन्दी और हिन्दुस्तान को स्थापित कर सकें।

उद्देश्य :-

1. विभिन्न साहित्यिक अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करना और उन पर आधारित विचारों को विकसित करने की छमता को बढ़ाना।
2. छात्रों को हिन्दी साहित्य और संबंधित क्षेत्रों में शोध अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना।
3. विद्यार्थियों का आजीवन शिक्षार्थी बनने में सक्षम बनाना जो जरूरत पड़ने पर स्वतंत्र रूप से अपनी साहित्यिक विशेषज्ञता का विस्तार करने में सक्षम हो।
4. भारतीय संस्कृति के परिवर्द्धन, संपोषण एवं राष्ट्र निर्माण में युवाओं के मन में अपनी भाषा तथा देश के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न करना।

प्रोग्राम : एम.ए. हिन्दी

प्रोग्राम कोड : 518

प्रोग्राम अवधि : 4 सेमेस्टर (2 वर्ष)

कुल सीट : 65

योग्यता : स्नातक

उम्र सीमा : निरंक

प्रवेश प्रक्रिया : प्रवेश योग्यता परीक्षाओं की योग्यता के अनुसार मेरिट के आधार पर किया जायेगा।

हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

Programme Outcome -

PO 1 : आलोचनात्मक सोच – कार्यों से संबंधित विभिन्न अवधारणाएँ बनाकर कार्यों के प्रगति का अवलोकन करना और यह देखना कि किस हद तक कार्य का क्रियान्वयन हो चुका है।

PO 2 : प्रभावी संचार – कम्प्यूटर का उपयोग करते हुए साहित्य को जानना, विषय से संबंधित विभिन्न टॉपिकों में विचार विमर्श के माध्यम से समस्याओं को हल करना।

PO 3 : सामाजिक अंतःक्रिया – टॉपिक से संबंधित दूसरों के विचारों को ग्रहण करना, सहमति और असहमति में मध्यस्थता करना और निष्कर्ष तक पहुँचना।

PO 4 : प्रभावी नागरिकता – सहानुभूतिपूर्ण सामाजिक सरोकार और समता केन्द्रित राष्ट्रीय विकास और मुद्दों के बारे में सूचित जागरूकता के साथ कार्य करने की क्षमता और नागरिकता जीवन में भाग लेने के माध्यम को विकसित करना।

PO 5 : नैतिकता – अपने सहित विभिन्न मूल्य प्रवृत्तियों को पहचानना, अपने निर्णयों के नैतिक आयामों को समझना और उसके लिए जिम्मेदारी को स्वीकार करना।

PO 6 : पर्यावरण और स्थिरता – पर्यावरणीय संदर्भों और सतत् विकास के मुद्दों को समझना।

PO 7 : स्व निर्देशित और जीवन भर सीखना – सामाजिक, तकनीकी परिवर्तनों के व्यापक संदर्भ में स्वनिर्देशित होना और जीवन भर सीखना।

Programme Specific Outcome -

PSO 1 : हिन्दी साहित्य से संबंधित विभिन्न विषयों का अध्ययन करके उसकी उपयोगिता को जानना।

PSO 2 : समकालीन साहित्य में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।

PSO 3 : साहित्य से संबंधित गुणात्मक एवं मात्रात्मक ज्ञान प्राप्त करना। शोध के क्षेत्र में साहित्य के योगदान का अध्ययन करना।

PSO 4 : शिक्षा, ज्ञान या अनुसंधान में उत्कृष्टता प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना।

एम.ए. हिन्दी के लिए पाठ्यक्रम संरचना

(CBCS)

सेमेस्टर–I :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-101**	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-102**	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-103**	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-104**	प्रयोजन मूलक हिन्दी	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

सेमेस्टर–II :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-201**	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-202**	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-203**	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-204**	प्रयोजन मूलक हिन्दी	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

सेमेस्टर–III :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-301**	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-302**	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-303**	हिन्दी साहित्य का इतिहास	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-304**	वैकल्पिक प्रश्न–पत्र (सूरदास, तुलसीदास, बघेली भाषा और उसका इतिहास)	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

सेमेस्टर–IV :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-401**	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-402**	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-403**	हिन्दी साहित्य का इतिहास	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-404**	वैकल्पिक प्रश्न–पत्र (सूरदास, तुलसीदास, बघेली भाषा और उसका इतिहास)	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

Programme Administration :

मूल्यांकन :–

1. प्रत्येक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन 100 अंकों के लिए किया जायेगा जिसमें से 60 अंक लिखित परीक्षा के लिए होंगे और 40 अंक सतत् मूल्यांकन (मौखिकी) के लिए होंगे। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए 3.00 घंटे की सेमेस्टर परीक्षा होगी।
2. प्रत्येक पाठ्यक्रम के सेमेस्टर परीक्षा के प्रश्न–पत्र के दो खण्ड 'अ' और 'ब' होंगे। खण्ड–अ में लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे और खण्ड–ब में दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होंगे। प्रत्येक खण्ड में पांच प्रश्न होंगे प्रत्येक इकाई से एक आंतरिक विकल्प के साथ। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे।
3. सेमेस्टर के दौरान पाठ्यक्रम को पढ़ाने वाला शिक्षक प्रत्येक 20 अंकों के तीन परीक्षण आयोजित करके तीन बिन्दुओं पर छात्र का निरंतर मूल्यांकन करेगा। इनमें से दो लिखित परीक्षा होनी चाहिए और तीसरी लिखित परीक्षा/प्रश्नोत्तरी/सेमिनार/ असाइनमेंट हो सकती है। तीन में से दो सर्वश्रेष्ठ परीक्षणों में प्राप्त अंक छात्र को प्रदान किये जायेंगे।
4. सत्रांत परीक्षा में प्राप्त कुल अंक और निरंतर मूल्यांकन के तहत सर्वश्रेष्ठ दो परीक्षण पाठ्यक्रम में ग्रेड तय करेंगे।

हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

पाठ्यक्रम संरचना

(C.B.C.S.)

एम.ए. हिन्दी सेमेस्टर प्रथम

सेमेस्टर–I :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-101**	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-102**	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-103**	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-104**	प्रयोजन मूलक हिन्दी	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

(CC-101)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– यह प्रश्न–पत्र पढ़ाने का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी हिन्दी के प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों एवं काव्य से परिचित हो सकें। आदिकालीन काव्य अपभ्रंश के अवदान को समेटे है। मध्यकालीन काव्य लोकमंगल के स्वर साधता है। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परम्परा को सुरक्षित रखा है।

पाठ्य विषय :–

ईकाई–01 :

1. विद्यापति – 20 पद (विद्यापति पदावली संपा. रामवृक्ष बेनीपुरी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज)
   पद क्रमांक– 1, 4, 5, 7, 8, 11, 12, 14, 15, 16, 20, 22, 23, 26, 27, 28, 29, 31, 33, 43
2. कबीर – कबीर ग्रंथावली, डॉ. श्यामसुन्दर दास
   गुरुदेव को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), सुमिरण को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), विरह को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), 'कबीर' हजारी प्रसाद द्विवेदी से 160वें पद से 175वें पद तक।
3. जायसी – पद्मावत, संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
   (मानसरोदक खण्ड एवं नागमती वियोग खण्ड)

ईकाई–02 :

विद्यापति, कबीर और जायसी से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई–03 :

प्राचीनकाल एवं मध्यकालीन काव्य (निर्गुण धारा) का इतिहास, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकारों से संबंधित प्रश्न।

इकाई–04 :

द्रुतपाठ के कवि–चंदबरदाई, अमीर खुसरो, रैदास, मीराबाई, रहीम से संबंधित लघुउत्तरीय प्रश्न।

इकाई–05 : वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ :–

1. कबीर ग्रंथावली सटीक, प्रो. पुष्पपाल सिंह, अशोक प्रकाशन दिल्ली।
2. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि, लेखक द्वारका प्रसाद सक्सेना, प्रकाशन श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन।
4. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य, लेखक प्रो. पूरनचंद टण्डन, प्रकाशक राजपाल एण्ड संस।
5. प्राचीन कवि, लेखक विश्वरम्भर 'मानव', प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य से परिचित कराना और भाषा के विकास समझना।
CO2	:	विद्यापति, कबीर और जायसी की रचनाओं का अध्ययन करना और जीवन के साथ उनके साम्य को परखना।
CO3	:	कबीर हिन्दी साहित्य के प्रथम व्यंग्यकार हैं इस उक्ति को समझना तथा कबीर साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
CO4	:	निर्गुण धारा से सगुण धारा तक के साहित्य का अध्ययन महत्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर करना तथा तुलसी साहित्य की आज के समय में प्रासांगिकता समझना।
CO5	:	मध्यकालीन काव्य से उत्तर मध्यकाल तक आने में भाषा में आये परिवर्तन एवं रीतिग्रंथों के प्रणयन का अध्ययन करना।

(CC-102)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– विद्यार्थियों को इस बात से परिचित कराना कि मनुष्य के राग–विराग, तर्क–वितर्क, चिन्तन–मनन जिस रागात्मकता तथा कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होते हैं अन्यत्र नहीं।

पाठ्य विषय :–

ईकाई–01 :

1. चंद्रगुप्त : जयशंकर प्रसाद
2. आधे–अधूरे : मोहन राकेश
3. गोदान : प्रेमचंद

इकाई–02 :

चंद्रगुप्त, आधे–अधूरे एवं गोदान से समीक्षात्मक प्रश्न

इकाई–03 :

हिन्दी नाटक, रंगमंच एवं उपन्यास के इतिहास की विविध प्रवृत्तियाँ और रचनाकारों पर निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई–04 :

लघुत्तरीय प्रश्न–द्रुतपाठ में निर्धारित गद्यकारों से सम्बद्ध दो लघुत्तरीय प्रश्न होंगे।

1. नाटककार : भारतेन्दु हरीशचन्द्र, डॉ. रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल।
2. उपन्यासकार : जैनेन्द्र, अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, मन्नू भण्डारी।

इकाई–05 :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ :–

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक बच्चन सिंह, प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन।
2. चन्द्रगुप्त, लेखक जयशंकर प्रसाद, प्रकाशक भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयागराज।
3. आधुनिक हिन्दी नाटक, डॉ. नगेन्द्र, साहित्य प्रेस आगरा।
4. मोहन राकेश और उनके नाटक, गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज।
5. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा, प्रकाशक मेहरचन्द्र मुंशीराम फैजबाजार, दिल्ली।
6. जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक भारती भण्डार, प्रयागराज।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों को इस बात से परिचित कराना कि मनुष्य के राग–विराग, तर्क–वितर्क, चिन्तन–मनन जिस रागात्मकता तथा कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होते हैं अन्यत्र नहीं।
CO2	:	आधुनिक काल में गद्य का विकास हुआ जिसकी भाषा खड़ी बोली है, गद्य विधाओं में उपन्यास, नाटक का अध्ययन करना।
CO3	:	जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों में भारतीय एवं पश्चात् चिंतन का विशेष अध्ययन करना, चंद्रगुप्त नाटक के विशेष संदर्भ में।
CO4	:	उपन्यासकार के रूप में मुंशी प्रेमचंद जी का अध्ययन 1906 से 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक विशेष संदर्भ में।
CO5	:	आधुनिक साहित्य से संबंधित प्रमुख गद्यकारों एवं नाटककारों के कथा और शिल्प का अध्ययन करना और उसका सामाजिक प्रभाव।

(CC-103)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यलोचन का ज्ञान अपरिहार्य है।

पाठ्य विषय :–

ईकाई–01 :

संस्कृत काव्यशास्त्र : काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

रस–सिद्धांत : रस का स्वरूप, रस–निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

अलंकार सिद्धांत : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

इकाई–02 :

रीति–सिद्धांत : रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

इकाई–03 :

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग्य, चित्रकाव्य।

औचित्य सिद्धांत : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

इकाई–04 :

हिन्दी 'कवि आचार्यों' का काव्य शास्त्रीय चिंतन। लक्षण–काव्य परंपरा एवं कवि–शिक्षा।

इकाई–05 :

हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : शास्त्रीय, व्यक्तिवाद, मार्क्सवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत, लेखक डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन।
2. काव्यशास्त्र, लेखक डॉ. भगीरथ मिश्र, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, लेखक डॉ. विवेक शंकर, प्रकाशक राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, रामचन्द्र तिवारी।
5. साहित्य शास्त्र, लेखक आचार्य बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक नंदकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी।
6. भारतीय काव्यशास्त्र, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा।
7. हिन्दी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार, रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
8. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना, प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, श्यामा प्रकाशन संस्थान प्रयागराज।
9. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ, डॉ. सत्यदेव मिश्रा।
10. वाद–विवाद संवाद नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
11. सौन्दर्य शास्त्र के तत्व, कुमार विमल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन और काव्यरूपों की जानकारी से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
CO2	:	सहृदय की अवधारणा और रस सिद्धांत की भूमिका के साथ आचार्य भरत मुनि के रस सूत्र की व्याख्या के आचार्यों की जानकारी देना।
CO3	:	अलंकार सिद्धांत के माध्यम से आचार्य भामह और अलंकार काव्य की आत्म मानने वाले आचार्यों के संबंध में छात्रों को जानकारी देना।
CO4	:	इसी तरह रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य सम्प्रदाय के सिद्धांतों की जानकारी विद्यार्थियों को देना।
CO5	:	हिन्दी कवि आचार्यों के काव्य विषयक मतों की जानकारी के साथ हिन्दी आलोचना और आलोचकों के संबंध में विद्यार्थियों को जानकारी उपलब्ध कराना।

(GE-104)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन व्यवहार से है। व्यक्तिपरक होकर भी यह समाज सापेक्ष सेवा माध्यम (सर्विसटूल्स) के रूप में प्रयुक्त होती है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार की समस्या हल होगी अपितु राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा का संस्कार की दृढ़ होगा।

पाठ्य विषय :–

ईकाई–01 : कामकाजी हिन्दी –

1. हिन्दी के विभिन्न रूप सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
2. कार्यालयीन हिन्दी, राजभाषा के प्रमुख प्रकार्य– प्रारूपण, पत्र–लेखन, संक्षेपण, पल्लवन टिप्पणी।

इकाई–02 :

पारिभाषिक शब्दावली–स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली के उदाहरण एवं उनका व्यावहारिक प्रयोग।

इकाई–03 : हिन्दी : कम्प्यूटर अनुप्रयोग

1. कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा बेब पब्लिशिंग का परिचय।
2. इंटरनेट, संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रथामिक, रख–रखाव वं इंटरनेट, समय मितव्ययिता के सूत्र।
3. बेब पब्लिकेशन।
4. इंटर एक्सरलोइट अथवा नेट स्केप।

5. लिंक, ब्राउजिंग पोर्टल, ई.मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पेार्टल, डाउलोडिंग एवं अपलोडिंग का साफ्टवेयर, पैकेज।

इकाई–04 :

1. पत्रकारिता स्वरूप एवं प्रकार।
2. हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।
3. समाचार–लेखनकला।
4. संपादन के आधारभूत तत्व।
5. व्यावहारिक प्रूफ शोधन।

इकाई–05 :

1. पत्रकारिता : शीर्षक की संरचना, लीड, इण्ट्रो एवं शीर्षक संपादन।
2. संपादकीय लेखन
3. पृष्ठसज्जा
4. साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस–प्रबंधन
5. प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार–संहिता।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी पत्रकारिता भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक, लेखक डॉ. धीरेन्द्र नाथ सिंह, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
2. हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप, लेखक बच्चन सिंह पत्रकार, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. कम्प्यूटर एक परिचय, लेखक विनय कुमार ओझा, प्रकाशन परीक्षा मंथन।
4. प्रयोजन मूलक हिन्दी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन दिल्ली।
5. जन पत्रकारिता, जनसंचार, सूर्यप्रसाद दीक्षित, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. सम्पूर्ण पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का हमारे सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन व्यवहार के आधार पर अध्ययन करना और इसके विविध आयामों से रोजगार समस्या को कैसे दूर किया जा सकता है। इसका अध्ययन करना।
CO2	:	हिन्दी की उपयोगिकता का कार्यालय भाषा के रूप में अध्ययन करना और राष्ट्र भाषा तथा राज भाषा के मध्य अंतर को जानना।
CO3	:	पारिभाषिक शब्दावली के उपयोग का अध्ययन विविध आयामों के आधार पर करना तथा केन्द्रीय पारिभाषिक शब्दावली संस्थान के कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
CO4	:	कम्प्यूटर के अनुप्रयोग का भाषा के आधार पर अध्ययन करना तथा हिन्दी साहित्य में कम्प्यूटर के प्रवेश और उपयोगिता को समझना।
CO5	:	पत्रकारिता स्पष्ट और सरल होनी चाहिए इस तथ्य को समझना तथा सम्पादन के आधारभूत तत्वों का अध्ययन करना और पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन करना।

हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

पाठ्यक्रम संरचना

(C.B.C.S.)

एम.ए. हिन्दी सेमेस्टर द्वितीय

सेमेस्टर–II :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-201**	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-202**	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-203**	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-204**	प्रयोजन मूलक हिन्दी	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

(CC-201)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– विद्यार्थियों को इस बात से परिचित कराना कि प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य की लोकमंगल की साधना अवस्था काव्य में किस प्रकार संभव होती है। साथ ही उत्तर मध्यकालीन काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड़ है। इसका अध्ययन समाज, संस्कृति एवं युग की धड़कनों को समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 :

सूरदास :– भ्रमरगीत सार, संपादक रामचन्द्र शुक्ल, पद क्रमांक 21 से 70 ।

तुलसीदास :– रामचरितमानस, अयोध्या काण्ड, दोहा क्रमांक 51 से 100।

बिहारी :– बिहारी रत्नाकर, संपादक जगन्नाथ रत्नाकर, दोहा क्रमांक 01 से 50।

इकाई–02 :

सूरदास, तुलसीदास एवं बिहारी से संबंधित निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई–03 :

भक्तिकाल (सगुण भक्तिधारा) एवं रीतिकाल का इतिहास प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकारों से संबंधित निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई–04 :

द्रुतपाठ के कवि, नंददास, मीराबाई, घनानंद और केशव से संबंधित, लघुत्तरीय प्रश्न।

इकाई–05 :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि, लेखक–द्वारका प्रसाद सक्सेना, प्रकाशक श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल, प्रकाशक नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. सूर और उनक साहित्य, हरवंशलाल शर्मा, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़।
5. रीतिकाव्य की भूमिका, डॉ. नागेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. गोस्वामी तुलसीदास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, इण्डियन प्रेस लि. प्रयागराज।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों को इस बात से परिचित कराना कि प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य की लोकमंगल की साधना व्यवस्था काव्य में किस प्रकार संभव होती है।
CO2	:	उत्तर मध्यकालीन काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड़ है। समाज, संस्कृति एवं युग की धड़कनों को समग्रता से समझने के लिए ये किस प्रकार उपयोगी है, इस काव्य की महत्ता से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
CO3	:	सूर, तुलसी और बिहारी साहित्य का अध्ययन करते हुए शिल्प के दृष्टि से साम्य और वैषम्य का अध्ययन करना और आज के समय को देखते हुए किसकी कितनी प्रासांगिकता है इस बात को समझना और अध्ययन करना।
CO4	:	भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल है ''इस उक्ति की तथ्यात्मक जांच महत्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर करना और तत्कालीन समाज में इसके कारण जीवन शैली में आए बदलावों का अध्ययन करना।
CO5	:	प्राचीनकाल से मध्यकाल तक आते–आते काव्य की भाषागत, शिल्पगत और विषयगत परिवर्तनों और परिवर्तन के कारणों का अध्ययन करना।

(CC-202)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– उपन्यास, कहानी तथा निबंध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है। इसका अध्ययन चिन्तन प्रक्रिया के विकास से परिचित होने के लिए आवश्यक है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01

(i) उपन्यास– बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ii) निबंध–

- देश सेवा का महत्व–बालकृष्ण भट्ट
- कछुआ धर्म–चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
- कविता क्या है–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- अशोक के फूल–हजारी प्रसाद द्विवेदी
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है–विद्यानिवास मिश्र
- प्रिया नीलकंठी–कुबेरनाथ राय
- पगडण्डियों का जमाना–हरिशंकर परसाई

(iii) निर्धारित कहानियाँ –

- उसने कहा था–चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
- पूस की रात–प्रेमचंद
- आकाशदीप–जयशंकर प्रसाद
- अपना अपना भाग्य–जैनेन्द्र कुमार
- तीसरी कसम–फणीश्वरनाथ रेणु
- लंदन की एक रात–निर्मल वर्मा
- राजा निरबंसिया–कमलेश्वर
- क्षमा करो हे वत्स–देवेन्द्र

(iv) पथ के साथी–महादेवी वर्मा

इकाई–02 :

बाणभट्ट की आत्मकथा, निर्धारित निबंध, कहानी एवं पथ के साथी से समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई–03 :

हिन्दी, कहानी, निबंध एवं अन्य गद्य विधाओं (रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृत्तांत, व्यंग्य आदि) के इतिहास प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकारों से सम्बद्ध निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई–04 :

लघुत्तरीय प्रश्न :– द्रुतपाठ में निर्धारित निम्नलिखित गद्यकारों पर केन्द्रित दो लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

निबंधकार :– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह।

कहानीकार :– अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, अमरकांत।

स्फुट ग्रंथ :– 1) अमृतराय (कलम का सिपाही), 2) शिवप्रसाद सिंह (उत्तर योगी), 3) हरिवंशराय बच्चन (क्या भूलूं क्या याद करूं), 4) राहुल सांस्कृत्यायन (घुमक्कड़ शास्त्र), 5) माखनलाल चतुर्वेदी (साहित्य देवता)

इकाई–05 :

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी में निबंध साहित्य, लेखक जनार्दनस्वरूप अग्रवाल, प्रकाशक साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयागराज।
2. कहानी : स्वरूप और संवेदना, लेखक राजेन्द्र यादव, प्रकाशक वाणी प्रकाशन।
3. एक दुनिया : समानान्तर, लेखक राजेन्द्र यादव, प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन।
4. हिन्दी कहानी की पहचान और परख, संपा. इन्द्रलाल मदान, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नयी कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. कहानी, नयी कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
7. निबंध नवगीत, लक्ष्मीसागर, वार्ष्णेय, वाराणसी वि.वि. प्रकाशन।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास से परिचित कराना, इसका अध्ययन चिन्तन प्रक्रिया के विकास को समझना।
CO2	:	विद्यार्थियों उपन्यास, कहानी तथा निबंध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य से परिचित कराना।
CO3	:	हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, बालकृष्ण भट्ट, विद्यानिवास मिश्र की रचनाओं का अध्ययन करना और जीवन के साथ उनके साम्य को परखना।
CO4	:	भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग छायावाद तक के साहित्य का विशेष अध्ययन तथा महादेवी वर्मा के विशेष संदर्भ में।
CO5	:	कहानीकार और उपन्यासकारों का विशेष अध्ययन जिससे जीवन में मूल्यों का विकास हो।

(CC-203)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– पाश्चात्य चिन्तकों के काव्यालोचन को जानने तथा पूर्ववर्ती एवं आधुनिक वैश्विक काव्य के मर्म को समझने के लिए यह प्रश्न–पत्र आवश्यक है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 :

प्लेटो : काव्य–सिद्धांत

अरस्तू : अनुकरण–सिद्धांत, त्रासदी–विवेचन, विरेचन–सिद्धांत

लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा।

इकाई–02 :

ड्राइडन के काव्य सिद्धांत

वड्र्सवर्थ : काव्य–भाषा का सिद्धांत

कालरिज : कल्पना–सिद्धांत और ललित–कल्पना

इकाई–03 :

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य

टी.एस. इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयाक्तिक प्रज्ञा, निवैर्यक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवदेनशीलता का असाहचर्य।

आई.ए. रिचर्डस : रागात्मक अर्थ। संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

इकाई–04 :

सिद्धांत और वाद : अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

इकाई–05 :

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियॉ : संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखण्डनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत, लेखक डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन।
2. काव्यशास्त्र, लेखक डॉ. भगीरथ मिश्र, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, लेखक डॉ. विवेक शंकर, प्रकाशक राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, रामचन्द्र तिवारी।
5. साहित्य शास्त्र, लेखक आचार्य बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक नंदकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी।
6. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य चिंतन, लेखक डॉ. सभापति मिश्र, प्रकाशक जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, आ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, मयूर बुक्स।
8. साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ, सं. उदयभान सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	प्लेटो, अरस्तू जैसे महान यूनानी दार्शनिकों के काव्य संबंधी सिद्धांतों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
CO2	:	टी.एस. इलियट, ड्रायडन जैसे कवियों के मनोभावों को सिद्धांतों के माध्यम से जानकारी प्रदान कराना। इनके मत सिद्धांत भारतीय काव्य सिद्धांतों से कहां तक मेल खाते हैं इन सबका परिचय कराना।
CO3	:	क्रोचे, लोंजाइनस, विलियम वर्डसवर्थ के काव्य लक्षण संबंधी मतों की जानकारी प्रदान कराना।
CO4	:	मैथ्यू अर्नाल्ड, कॉलरिज जैसे पाश्चात्य विचारकों के व्यवहारिक आलोचना के सूत्रों का अध्ययन विद्यार्थियों को कराना।
CO5	:	आई.ए. रिचर्डस के मूल्य और अनुभूति संप्रेषण पर विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना। काव्य भाषा सिद्धांत की जानकारी देना।

(GE-204)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– जनसंचार माध्यमों के अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रविधि एवं हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की उपयोगिता सर्वविदित है। विद्यार्थियों को इसका ज्ञान आवश्यक है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 : मीडिया लेखन –

1. जनसंचार–प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ।
2. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप–मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रृव्य, इंटरनेट।
3. श्रृव्य माध्यम–रोडियो, मैखिक भाषा की प्रकृति, समाचार लेखन एवं वाचन, रोडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज।

इकाई–02 :

1. दृश्य–श्रृव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन, विडियो), दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति, दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य, पार्श्व वाचन (वायस ओवर) पटकथा लेखन, टेलीड्रामा, डॉक्यू ड्रामा, संवाद–लेखन, साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों का रूपांतरण, विज्ञापन की भाषा।
2. इंटरनेट सामग्री सृजन – (Content creation)

इकाई–03 : हिन्दी : कम्प्यूटर अनुप्रयोग

1. अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि।
2. हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।
3. कार्यालयीन हिन्दी और अनुवाद।
4. जनसंचार माध्यमों का अनुवाद।
5. विज्ञापन में अनुवाद।

6. वैचारिक साहित्य का अनुवाद।

इकाई–04 :

1. वाणिज्यिक अनुवाद।
2. वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुवाद।
3. विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद।
4. व्यावहारिका अनुवाद अभ्यास।
5. कार्यालयीन अनुवाद :– कार्यालयीन एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक, प्रयुन्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि।
6. पत्रों के अनुवाद।
7. पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद।

इकाई–05 :

1. बैंक साहित्य के अनुवाद का अभ्यास।
2. विधि साहित्य के अनुवाद का अभ्यास।
3. साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक।
4. सरानुवाद।
5. दुभाषिया प्रविधि।
6. अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. आधुनिक मीडिया लेखन एवं हिन्दी रचना, लेखक डॉ. अशोक बत्रा, प्रकाशक लक्ष्मी प्रकाशन।
2. मीडिया संचार माध्यम एवं लेखन कला, लेखक रामप्रसाद मौर्य, प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
3. प्रयोजन मूलक हिन्दी की नयी भूमिका, लेखक कैलाशनाथ पाण्डेय, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमि.।
4. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, लेखक भोलानाथ तिवारी।
5. हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास, हिन्दी पत्रकारिता एवं निबंध लेखन प्रो. राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक भवदीय प्रकाशन, अयोध्या फैजाबाद।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	जनसंचार माध्यमों का स्वरूप क्षेत्र प्रविधि में हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की उपयोगिता सर्वविदित है, विद्यार्थियों को इसका अध्ययन कराना।
CO2	:	जनसंचार प्रौद्योगिकीय एवं चुनौतियॉ विभिन्न जन संचार माध्यम मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, श्रृव्य इंटरनेट समाचार लेखन विज्ञापन लेखन आदि का अध्ययन कराना।
CO3	:	टे फिल्म टेलीवीजन, वीडियो दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृत सामग्री का सामंजस्य पटकथा लेखन संवाद लेखन साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों का रूपान्तरण विज्ञापन की भाषा आदि की उपयोगिता को विद्यार्थियों को समझाना है।
CO4	:	अनुवाद का स्वरूप क्षेत्र एवं प्रविधि और हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका को स्पष्ट करना एवं उसके स्वरूपों का अध्ययन कराना।
CO5	:	जनसंचार माध्यमों का अनुवाद, कार्यालयीन हिन्दी अनुवाद, विज्ञापन में अनुवाद, वैचारिक साहित्य का अनुवाद, अनुवाद के माध्यम से देश–विदेश की भाषाओं को अनुवादित कर समस्त राष्ट्र को एक संस्कृति एवं एक सूत्र में बाधने के प्रयास की ओर विद्यार्थियों को जोड़ना एवं उसकी उपयोगिता को समझाना।

हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

पाठ्यक्रम संरचना

(C.B.C.S.)

एम.ए. हिन्दी सेमेस्टर तृतीय

सेमेस्टर–III :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-301**	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-302**	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-303**	हिन्दी साहित्य का इतिहास	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-304**	वैकल्पिक प्रश्न–पत्र (सूरदास, तुलसीदास, बघेली भाषा और उसका इतिहास)	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

(CC-301)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अध्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सारणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। अतः संवेदना तथा ज्ञानक्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 : व्याख्यांश –

1. मैथिलीशरण गुप्त : साकेत (नवम् सर्ग)
2. जयशंकर प्रसाद : कामायनी (चिंता, श्रद्धा एवं इडा सर्ग)
3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : निर्धारित संकलन–राग विराग (संपादक रामविलास शर्मा) में संकलित कविताएँ। राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति एवं कुकुरमुत्ता।

इकाई–02 :

मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद एवं निराला से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न (एक)

इकाई–03 :

आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावाद तक) की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, इतिहास और प्रमुख कवि

इकाई–04 :

लघुउत्तरीय प्रश्न :– (दो)

द्रुतपाठ से निर्धारित कवि जगन्नाथदास रत्नाकर अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, महादेवी वर्मा और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से संबंध दो लघुउत्तरीय प्रश्न।

इकाई–05 :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक डॉ. रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन।
2. आधुनिक हिन्दी काव्य और कवि, लेखक डॉ. रामचन्द्र तिवारी, प्रकाशक नया साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद।
3. कामायनी की टीका, लेखक श्री विश्वम्भर 'मानव', प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. निराला और अपरा, लेखन डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. साकेत की टीका, लेखक ओम प्रकाश सिंहल, प्रकाशन हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अध्यावधि तक की संवेदनाओं, भावनाओं, नूतन विचारों एवं ज्ञानक्षितिज के विस्तार को दृष्टिगत करते हुए आधुनिक हिन्दी काव्य का अध्ययन करना।
CO2	:	काव्य में नारी विषयक उदासीनता का अध्ययन करते हुए गुप्त जी के साकेत महाकाव्य में उर्मिला की स्थिति को स्पष्ट करना और इस तथ्य को समझना की साकेत का नवम् सर्ग साकेत की हृदयस्थली क्यों हैं?
CO3	:	छायावाद के प्रवेश को जानना और प्रसाद, निराला की कविताओं में तत्कालीन समय के समाज का अध्ययन करना। शुक्ल जी द्वारा छायावाद पर लगाए आक्षेपों और उसके बचाव में कवियों के आलोचनात्मक ग्रंथ लिखने की परम्परा का अध्ययन करना।
CO4	:	छायावाद पर पश्चिम के स्वच्छंदतावाद का क्या प्रभाव पड़ा; और छायावादी काव्य ने भाषा का एक मानक रूप कैसे स्थिर किया इस बात का अध्ययन करते हुए प्रतीकों और बिम्बों के प्रवेश को हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में समझना।
CO5	:	ब्रजभाषा के अवसान और खड़ी बोली हिन्दी के उत्थान को आधुनिक काव्य के परिप्रेक्ष्य में समझना।

(CC-302)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मित है। साहित्य के गम्भीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 :

भाषा और भाषा विज्ञान–भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषा विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

इकाई–02

स्वप्न प्रक्रिया–स्वप्न विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वांगयंत्र और उनके कार्य स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वन–गुण, स्वनिक–परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम में भेद, स्वनिमिक–विश्लेषण।

इकाई–03 :

व्याकरण–रूपविज्ञान का स्वयप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद मुक्त–आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी भेद और प्रकार। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण, गहन–संरचना और बाह्य संरचना।

इकाई–04

अर्थविज्ञान–अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ प्राप्ति के साधन, अर्थ परिवर्तन।

इकाई–05

साहित्य और भाषाविज्ञान–साहित्य में अध्ययन में भाषाविज्ञान के अंगों की अपयोगिता।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भाषा–विज्ञान, लेखक डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रकाशक किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान, लेखक डॉ. विवेक शंकर, प्रकाशक राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. भाषा विज्ञान की भूमिका, लेखक आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. भाषा विज्ञान सिद्धांत और स्वरूप, डॉ. जितराम पाठक, अनुपम प्रकाशन पटना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों को साहित्य के गम्भीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान से अवगत कराना।
CO2	:	भाषा और भाषा विज्ञान का अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक ऐतिहासिक और तुलनात्मक रूप में करना।
CO3	:	स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वांगयंत्र और उनके कार्यों को परखना।
CO4	:	विद्यार्थियों को अर्थविज्ञान, अर्थ परिवर्तन की अवधारणा से परिचित कराना।
CO5	:	साहित्य और भाषा विज्ञान साहित्य में अध्ययन में भाषा विज्ञान के अंगों की उपयोगिता को समझना।

(CC-303)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– साहित्य के इतिहास का परिचय, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा और पुनर्लेखन के ज्ञान हेतु यह प्रश्न–पत्र अनिवार्य है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 :

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।

इकाई–02

हिन्दी साहित्य के आदिकाल की पृष्ठभूमि, साहित्यक प्रवृत्तियाँ, काव्याधाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और इनकी रचनाएँ।

इकाई–03 :

पूर्वमध्यकाल भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना एवं भक्ति आंदोलन, विभिन्न काव्य धाराएँ तथा उनका विश्लेषण, प्रमुख निर्गुण संत कवि और प्रमुख सूफी कवियों का अवदान।

इकाई–04

राम काव्य और कृष्णकाव्य : प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य।

इकाई–05

उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण, विविध धाराएँ रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. इतिहास और आलोचना–नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. साहित्य और इतिहास दृष्टि, डॉ. मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. साहित्य इतिहास और संस्कृति, शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	भक्तिकाल की विशेषतायें, भक्ति के मार्ग और सूरदास के सखाभाव कृष्ण की भक्ति पर सगुण प्रेम की स्थापना आदि पर विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना।
CO2	:	भक्ति और विनय के पदों के माध्यम से सूरदास के व्यक्तित्व और रचना धर्मिता पर जानकारी प्रदान कराना।
CO3	:	बाललीला, ब्रजलीला और राधाकृष्ण लीला के आधार पर वात्सल्य और श्रृंगार के रूपों का अध्ययन कराना।
CO4	:	सूर जन्मोंध रहे हैं यह आलाचकों के बीच संवाद का विषय रहा है। इसके माध्यम से जानकारी प्रदान करना।
CO5	:	सूर साहित्य के विविध आलोचकों और उनके द्वारा सूर साहित्य की श्रेष्ठता के आधारों को विद्यार्थियों को परिचित कराना।

(GE-304)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– तुलसीदास का रामचरितमानस भारतीय जनमानस की कथा कहती है मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र परिचय कराने के लिए यह प्रश्न–पत्र है।

पाठ्य विषय :–

व्याख्या हेतु निर्धारित – रामचरित मानस (बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड)

आलोचनात्मक प्रश्न – तुलसीदास की युगीन पृष्ठभूमि, जीवन, कृतित्व एवं रामचरित मानस से संबंधित होंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. रामचरितमानस, प्रकाशक गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. गोस्वामी तुलसीदास, रामचंद्र शुक्ल, इण्डियन प्रेस प्रयागराज।
3. तुलसीदास, उदयभान सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।
4. लोकवादी तुलसीदास, डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाश नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन की परम्परा और पुनर्लेखन के माध्यम से छात्र–छात्राओं को हिन्दी साहित्य के इतिहास से परिचित कराना एवं अध्ययन कराना।
CO2	:	आदिकाल की पृष्ठभूमि साहित्यिक प्रवृत्तियॉ काव्यधाराएँ गद्य साहित्य प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ एवं उनकी प्रमुख विशेषताओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
CO3	:	भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सांस्कृतिक चेतना एवं भक्ति आंदोलन के माध्यम से निर्गुण संत एवं सगुण संतों का अध्ययन कर विद्यार्थियों को समरस्ता की ओर प्रेरित करना।
CO4	:	राम काव्य और कृष्ण काव्य के प्रमुख रचनाकारों और उनके काव्य के माध्यम से राम के चरित्र और श्री कृष्ण के चरित्र के माध्यम से समाज में नये आदर्श की स्थापना करना और विद्यार्थियों को सदमार्ग में चलने के लिए इनकी काव्य रचना का जैसे रामचरित मानस और सूर सागर का अध्ययन कर समाज एवं राष्ट्र में शांती स्थापित करने का मार्ग प्रसस्त करना।
CO5	:	रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण विविध धाराएँ रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त प्रवृत्तियॉ और विशेषताओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना। केशव, बिहारी, देव, पद्माकर, घनानन्द की काव्य रचनाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

(GE-304)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– भारत एक कृषि प्रधान देश है। सूरदास कृषक संस्कृति एवं पशुपालन संस्कृति के कवियों में वरेण्य हैं। वे प्रेम और वात्सल्य के अद्भुत चितेरे हैं। विद्यार्थियों को इस संवेदनों से परिचित कराने के लिए यह वैकल्पिक प्रश्न–पत्र निर्धारित है।

ग्रंथ 'सूरसागर सार' संपादक – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा

निर्धारित पद (प्रारम्भ से मथुरागमन के पूर्व तक) आलोचनात्मक प्रश्न सूर साहित्य की पृष्ठभूमि, जीवन, रचनाएँ तथा निर्धारित अंश से सम्बद्ध पूछे जाएँगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. सूरदास, लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक नागरी प्राचारिणी सभा, वाराणसी।
2. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
3. सूरदास : मूल्यांकन पुनर्मूल्याकन, लेखक परमानन्द श्रीवास्तव, प्रकाशक अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. सूर साहित्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

(GE-304)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– आज वैश्वीकरण का जमाना है। 'वसुधा' कुटुम्ब हो रही है परन्तु बिना जमीन पर खड़े हुए आकाश को नहीं निहारा जा सकता। बिना 'लोकल' के हम 'ग्लोबल' की कल्पना नहीं कर सकते। विद्यार्थियों को उनकी जमीन, बोली–बानी भाषा के मर्म से परिचित कराने के लिए जनपदीय भाषा और साहित्य के अध्ययन हेतु 'बघेली भाषा एवं साहित्य के अन्तर्गत मानवता की मातृभाषा कविता का यह प्रश्न–पत्र रखा गया है।

इकाई-01 :-

बघेली तथा हिन्दी की अन्य बोलियाँ, बघेली का उद्भव और विकास, बघेली का व्याकरण।

इकाई-02 :- **बघेली कविता**

बैजनाथ पाण्डेय 'बैजू', सैफूद्दीन सिद्दिकी 'सैफू', शम्भूनाथ द्विवेदी 'शम्भू काकू', गोमती प्रसाद 'विकल', अमोल वटरोही, अनूप अशेष।

पाठ्यपुस्तक–बघेली भाषा एवं साहित्य–संपादक डॉ. प्रतिभा चतुर्वेदी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

इकाई-03 :- उपर्युक्त कवियों से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई-04 :- बघेली लोक साहित्य के विशेषताएँ।

इकाई-05 :- द्रुतपाठ के कवि (कालिका प्रसाद त्रिपाठी, डॉ. रामसिया शर्मा, शिवशंकर मिश्र 'सरस', डॉ. कैलाश तिवारी, बाबूलाल दाहिया, सुधाकांत मिश्रा 'बेलाला', रामनरेश तिवारी 'निष्ठुर', सुदामा शरद, सुधाकांत मिश्रा 'बेलाला',)।

पाठ्यपुस्तक–बघेली भाषा और साहित्य संपादक डॉ. सत्येन्द्र शर्मा, प्रकाशकः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. नेउतहरी–सैफूद्दीप सिद्दिकी 'सैफू'।
2. चिरई चुनगुन–डॉ. भागवत प्रसाद शर्मा, कुमार प्रकाशन रीवा।
3. सेंदूर केर बोझ–श्रीमती रश्मि शुक्ला, गणेश प्रकाशन मंदिर प्रयागराज।
4. थोर का सुख–डॉ. चंद्रिका प्रसाद 'चंद्र', रूपांकन प्रकाशन इन्दौर।
5. फूलमती–योगेश त्रिपाठी, उत्कर्ष प्रकाशन 142 शाक्यपुरी, कंकर खेड़ा मेरठ उत्तरप्रदेश।
6. लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन–(बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड के संदर्भ में), डॉ. विनोद त्रिपाठी, साहित्य वाणी प्रयागराज।

हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

पाठ्यक्रम संरचना

(C.B.C.S.)

एम.ए. हिन्दी सेमेस्टर चतुर्थ

सेमेस्टर–IV :

क्र.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट	अधिकतम अंक		कुल	न्यूनतम अर्हता अंक	
				लिखित अंक	मौखिकी अंक		लिखित अंक	मौखिकी अंक
1.	**CC-401**	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास	04	60	40	100	21	14
2.	**CC-402**	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	04	60	40	100	21	14
3.	**CC-403**	हिन्दी साहित्य का इतिहास	04	60	40	100	21	14
4.	**GE-404**	वैकल्पिक प्रश्न–पत्र (सूरदास, तुलसीदास, बघेली भाषा और उसका इतिहास)	04	60	40	100	21	14
		कुल कोर्स क्रेडिट	16	240	160	400	–	–

(CC-401)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– आधुनिक हिन्दी काव्य और उसके इतिहास से विद्यार्थियों को परिचित कराना। स्वतंत्रता आंदोलन और तत्पश्चात् स्वतंत्र्योत्तर भारत की गति दशा और दिशा के काव्य से परिचित कराना।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 : व्याख्यांश –

1. सुमित्रानंदन पंत–निर्धारित संकलन, रश्मिबंध में संकलित परिवर्तन, नौकाविहार, एक तारा, मौन निमंत्रण आ धरती कितना देती है।
2. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, कलगी बाजरें की, परती का गीत।
3. गजानन माधव मुक्तिबोध, ब्रह्म राक्षस कम, मुझे कदम–कदम पर, लकड़ी का बना रावण।

इकाई–02 :

पंत, अज्ञेय और मुक्तिबोध से संबंध समीक्षात्मक प्रश्न

इकाई–03 :

छायावादोत्तर काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, इतिहास और प्रमुख कवियों पर निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई–04 :

लघुउत्तरीय प्रश्न :– (दो)

दुतपाठ से निर्धारित कवि हरिवंशराय बच्चन, भवानी प्रसाद मिश्र, श्री नरेश महेता, रघुवीर से संबंध दो लघुउत्तरीय प्रश्न।

इकाई–05 :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक डॉ. रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन।
2. आधुनिक हिन्दी काव्य और कवि, लेखक डॉ. रामचन्द्र तिवारी, प्रकाशक नया साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद।
3. छायावाद, डॉ. नामवर सिंह, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. आधुनिक कवि, विश्वम्भर 'मानव', रामकिशोर शर्मा, प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. सुमित्रानंदन पंत, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसके इतिहास से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
CO2	:	स्वतंत्रता आंदोलन और तत्पश्चात् स्वंतत्र्योत्तर भारत की गति, दशा एवं दिशा के काव्य का अध्ययन करना।
CO3	:	पश्चिमी साहित्य के प्रभाव से हिन्दी साहित्य में आए विभिन्न वाद (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, बिम्बवाद, प्रतीकवाद) का अध्ययन करना।
CO4	:	तार सप्तक के बारे में जानकारी देते हुए तार सप्तक प्रमुख कवियों और उनके काव्य विषयों का अध्ययन करना।
CO5	:	आधुनिक काव्य में भारतेन्दु युग से नयी कविता और फिर समकालीन कविता तक आते–आते काव्य की भाषा, रूप, विषय में आए परिवर्तनों को जानना और समकालीन कविता में विभिन्न विमर्शों का अध्ययन करना।

(CC-402)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक ईकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अन्तर्संबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अर्द्धदृष्टि देता है। अपितु भाषा विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है।

पाठ्य विषय :–

ईकाई–01 :

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ–पालि, प्राकृत–शैरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।

इकाई–02 :

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

इकाई–03 :

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था–खंड्य, खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूप रचना–लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम विशेषण और क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य–रचना : पदक्रम और अन्विति।

इकाई–04 :

हिन्दी के विविध रूप : संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा, हिन्दी की साविधानिक स्थिति।

इकाई–05 :

हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ : आँकड़ा–संसाधन और शब्द संसाधन, वर्तनी–शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा–शिक्षण।

देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण –

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भाषा–विज्ञान, लेखक डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रकाशक किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान, लेखक डॉ. विवेक शंकर, प्रकाशक राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. भाषा विज्ञान की भूमिका, लेखक आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. भाषा विज्ञान सैद्धांतिक चिन्तन, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों को भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर प्रकाश डालना।
CO2	:	भाषा विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा का भी अध्ययन करना।
CO3	:	प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का अध्ययन करना।
CO4	:	हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहड़ी और उनकी बोलियों के बारे में समझना।
CO5	:	हिन्दी के विविध रूपों में संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन करना।

(CC-403)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– हिन्दी एम.ए. के विद्यार्थियों के लिए काव्य एवं कथा और उपन्यास सर्जना के इतिहास से परिचित होने के अनिवार्य है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 :

आधुनिक काल :– आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. का प्रथम स्वाधीनता संग्राम और पुनर्जागरण।

भारतेन्दु युग :– प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई–02 :

द्विवेदी युग :– प्रमुख साहित्यकार रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ। हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास, छायावादी काव्य, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई–03 :

उत्तर छायावाद की विविध प्रवृत्तियाँ : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई–04 :

हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ : कहानी, उपन्यास, नाटक निबंध आदि।

इकाई–05 :

संस्मरण रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा का विकास। हिन्दी आलोचना का उद्‌भव एवं विकास। स्त्री विमर्श और दलित विमर्श का परिचय।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. राम कुमार वर्मा
3. छायावाद, डॉ. नामवर सिंह
4. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, नंददुलारे वाजपेयी

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	विद्यार्थियों के लिए काव्य एवं कथा और उपन्यास सर्जना के इतिहास से परिचित कराना।
CO2	:	आधुनिक काल की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं सन् 1857 ई. का प्रथम स्वाधीनता और संग्राम पुनः जागरण काल के माध्यम से छात्र–छात्राओं को उस युग के साहित्यकारों और समाजसेवियों को परिचित कराना।
CO3	:	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यकारों एवं उनकी साहित्यिक विशेषताओं का अध्ययन कराना एवं स्वछंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास छायावादी काव्य और प्रमुख साहित्यकार उनकी रचनाएँ इसके अध्ययन ने हिन्दी की शुद्ध परिनिष्ठित भाषा के साथ–साथ साहित्य सृजन से छात्र–छात्राओं को परिचित कराना।
CO4	:	प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता के माध्यम से नागार्जुन एवं केदारनाथ अग्रवाल की रचनाओं के माध्यम से युवाओं को छात्र–छात्राओं को राष्ट्र प्रेम एवं यथार्थ बोध का परिचय कराना।
CO5	:	संस्मरण रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा का विकास हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास, स्त्री विमर्श और दलित विमर्श का परिचय एवं समाज में इनका अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में चेतना जाग्रत कराना।

(GE-404)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– 'कवितावली' सिर्फ राम की कथा नहीं तत्कालीन समाज की धड़कन है। विनय पत्रिका भक्ति, आस्था अज्ञेर समर्पण का काव्य है। विद्यार्थियों के लिए यह परिचय यह आवश्यक है।

पाठ्य विषय :–

व्याख्या हेतु निर्धारित – कवितावली एवं विनय पत्रिका।

आलोचनात्मक प्रश्न – तुलसी की भक्ति, दर्शन तथा निर्धारित कृतियों से संबंधित होंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. रामचरितमानस, प्रकाशन गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. तुलसीदास और उनकी कविता, रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मंदिर प्रयागराज।
3. तुलसीदास, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी।
4. तुलसी के हिय हेरि, विष्णुकांत शास्त्री।

(GE-404)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– सूरदास हिन्दी साहित्य के सूर्य है। हिन्दी के विद्यार्थियों के ज्ञान और संवेदना के विकास के लिए यह प्रश्न–पत्र आवश्यक है।

ग्रंथ 'सूरसागर सार' संपादक – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा

निर्धारित पद (मथुरागमन से अंत तक) आलोचनात्मक प्रश्न सूर साहित्य की भक्ति, दर्शन, भ्रमरगीत आदि तथा सूरसागर के निर्धारित अंश से सम्बद्ध पूछे जाएँगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. सूरदास, लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशन नागरी प्राचारिणी सभा, वाराणसी।
2. भ्रमरगीत सार की टीका, लेखक डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी।
3. सूरदास, ब्रजेश्वर वर्मा, हिन्दी परिषद विश्वविद्यालय प्रयागराज।
4. सूरदास : मूल्यांकन पुनर्मूल्याकन, लेखक परमानन्द श्रीवास्तव, प्रकाशन अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम : इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र सक्षम होंगे :–

CO1	:	निर्गुण और सगुण भक्ति में श्रेष्ठ कौन? सूरदास के मथुरागमन के बाद के पदों में विरह भावों की व्यंजना है। इन्हीं के माध्यम से सगुण भक्ति की स्थापना को विद्यार्थियों को परिचित कराना।
CO2	:	विरह प्रेम की कसौटी है निर्गुण ब्रह्म की साधना का उपदेश द्वारा गोपियों को इसकी जानकारी तथा गोपियों द्वारा प्रेममार्ग की महत्ता पर अपने चातुरी वचनों को प्रस्तुत करना।
CO3	:	विरह के पदों को भ्रमरगीत नाम दिया गया है भ्रमरगीत के माध्यम से प्रेम में विरह की आकुलता के साथ श्रेष्ठता के दर्शन भी गोपियों द्वारा तर्क संगत उलाहने, व्यंग्य वचन आदि की जानकारी प्रदान करना।
CO4	:	कृष्ण का वृत्त से लगाव और ब्रज का तथा ब्रजवासी खाशतोर पर गोपियों का कृष्ण से लगाव एक मानवी संसार सृजित होता है। इसका परिज्ञान विद्यार्थियों को देना।
CO5	:	विरह का विषमान करना इतना सरल नहीं संघर्ष त्याग, प्रेम, मनोभावों का परिमार्जन आदि इन पदों में संग्रहित है। इन्हीं का महत्व विद्यार्थियों को बतलाना।

(GE-404)

क्रेडिट : 04	अधिकतम अंक	न्यूनतम प्राप्तांक
लिखित अंक	60	21
सतत् मूल्यांकन अंक	40	14

उद्देश्य :– गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है। स्थानीय भाषा एवं साहित्य के अन्तर्गत विद्यार्थियों को जनपदीय भाषा के गद्य से परिचित कराने के लिए बघेली नाटक और कहानी का यह प्रश्न–पत्र लिखा गया है।

इकाई-01 :- बघेली कहानी

1. सैफूद्दीन सिद्दिकी 'सैफू' – नेउतहरी
2. डॉ. भागवत प्रसाद शर्मा – चिरई चुनगुन
3. श्रीमती रश्मि शुक्ला – सेंदुर केर बोझ
4. डॉ. चंद्रिका प्रसाद 'चंद्र' – थोर का सुख
5. डॉ. रामसिया शर्मा – उपरेहित

इकाई-02 :- बघेली नाटक

योगेश त्रिपाठी – 'फूलमती'

इकाई-03 :-

उपर्युक्त लेखकों से संबंधित अलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई-04 :-

बघेली लोकगीत, लोक कथाएँ, लोकनाट्य से संबंधित लघु उत्तरीय प्रश्न।

इकाई-05 :-

द्रुतपाठ के लेखक (डॉ. चंद्रिका प्रसाद 'चंद्र', डॉ. रामसिया शर्मा, श्रीमती रश्मि शुक्ला, डॉ. भागवत प्रसाद शर्मा, सैफूद्दीन सिद्दिकी 'सैफू') संबंधित लघुउत्तरी प्रश्न।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. बघेली भाषा और साहित्य–डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल, प्रकाशक साहित्य भवन प्रयागराज।
2. बघेली साहित्य का इतिहास–डॉ. आर्या प्रसाद त्रिपाठी, साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश।
3. बघेली संस्कृति और साहित्य–गोमती प्रसाद 'विकल', प्रकाशक राजभाषा एवं संस्कृत संचालनालय, मध्यप्रदेश।
4. बघेली भाषा एवं साहित्य–डॉ. प्रतिभा चतुर्वेदी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
5. सोन एवं रेवा के स्वर–संपा. डॉ. कमला प्रसाद, सेवाराम त्रिपाठी, बाबूलाल दाहिया, शिवशंकर मिश्र 'सरस', राजभाषा संचालनालय, भोपाल।
6. बघेलखण्ड के लोकगीत–लखन प्रताप सिंह उरगेस, मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल।
7. हम तोंहार विरवा–कैलाश तिवारी, कुमार प्रकाशन रीवा।
8. बघेली व्याकरण–डॉ. सूर्यभान सिंह, प्रकाशन हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
9. रनजीत राय–गोमती प्रसाद 'विकल', वर्क प्रिन्टिंग प्रेस, रीवा।